जयदेव कृत गीतगोविन्दम् में संगीतात्मकता

डॉ0 इभा सिरोठिया
एसोसिएट प्रोफेसर संगीत गायन
आर्यकन्या डिग्री कॉलेज
इलाहाबाद

राग काव्य का प्रमुख काव्य गीत गोविन्द है। सम्पूर्ण काव्य में संगीतात्मकता भरी हुई है संगीत के हर पक्ष का स्वरूप इसमें दृष्टिगोचर होता है।

महाकवि जयदेव ने अपने गीतगोविन्द में प्रत्येक गीत के लिए प्रबंध और अष्टपदों का प्रयोग किया है । संगीत की दृष्टि से गीतगोविन्द में 24 प्रबन्ध या अष्टपंक्तियां हैं। महाकवि जयदेव उन्हें पदावली कहना पसन्द करते थे जो अष्टपदियों के नाम से लोकप्रिय हुई हैं। राग और ताल का आधार ये अष्टपदियां है। अतः मात्रावृत्तों में रचित ये अष्टपदियां सहज संगीत से परिपूर्ण हैं। यही कारण है कि मात्रा वृत्तों में रचित अष्टपदियों का शास्त्रीय संगीत के अनुसार गायन एवं अमिनय होता है। जयदेव की ये अष्टपदियां द्विधातु प्रबन्ध है जो उद्ग्रह तथा ध्रुव में विभाजित हैं । कर्नाटक संगीत में ये 'पल्लवी' और चरण में विभाजित हैं।

गीगोविन्द रागकाव्य में 'बसन्त', रामकिरी, रागमालव, गुर्जरी, कर्णाटक, देशाख्य, देशवराड़ी, गौड़मालव देशांक, भैरवी, वराटि, विभास, आदि रागों का प्रयोग किया गया है। इन अष्टपदियों में निम्नलिखित तालों का प्रयोग किया गया है – रूपकताल प्रतिमण्ठ ताल, यति ताल, एकताल, आडव ताल आदि।

उदाहरण स्वरूप गीतगोविन्द रागकाव्य में रागों तथा तालों का संयोजन इस प्रकार है ––

बसन्त रागेण यति तालेन गीयते

ललितलवङ्ग लतापरिशीलन कोमल मलयसमीरे।

मधुकर निकरकरम्बित कोकिल कूंजित कुंज कुटीरे।।

विहरति हरिरिह सरसवसन्ते

नृत्यति युवतिजनेन समंसखि विरहिजन्सय दुरन्ते ।।1।।

उन्मदमदन मनोरथ पथिक वधूनज जनित विलापे।

अलिकुलसङ्कुलकुसुमसमूह निराकुलबकुलकलापे।।चि02।।

मृदमदसौरभरभसवशंवदन बदल मालतमाले।

युवजन हृदय विदारण मनसिज रूचि किंशुकजाले।। वि0 3 ।।

मदन महीप तिकनकदण्ड रूचि केसरकुसुम विकासे।

मिलित्तशिलीमुलपाट लिपटलकृतस्मरण तूण विलासे ।।वि0 4 ।।

विगलितलज्जितजगदवलोकन तरूण वरूण कृतहासे ।

बिरहि निकृन्तन कुन्तमुलाकृतिकेत किंदन्तु रिताशे ।।वि05।।

माघ विकायपरिमललिते वनमालिकयातिसुगन्धौ।

मुनिमनसामपि मोहनकारिणि तरूणाकारणबन्धौ ।।वि06।।

स्फुरवतिमुक्त लतापरिरम्मणमुकुलितपुलकित चूते।

वृन्दावनविपिने परिसरपरिगतयमुनाजलपूते ।। वि0 7 ।।

श्री जयदेवम णितमिदमुदयति हरिचरणस्मृतिसारम् ।

सरसक्सन्तसमयवनवर्णनमनुगतमदनविकारम् ।। वि0 8 ।।[1]

'गीतगोविन्द' से ही एक अन्य अष्टपदी राग देशवराडि तथा आडवताल में दृष्टव्य है –

यह सर्वविदित है कि गीत गोविन्द की रचना अभिनय के उद्देश्य से हुई थी और इसका अभिनय जयदेव की पत्नी पद्मावती द्वारा किया गया था । उदाहरण स्वरूप –

<u>देशवराडि रागे आडव ताले अष्टपदी</u>
वदसि यदि किंचदपि दन्त रुचि कौमुदी
हरति वरचिमिरमतियोरम्।
स्फुरदधरसीथवे तव वदन चन्द्रमा
रोचयति लोचनचकोरम् ।[2]

इस पद से यह ज्ञात होता है कि जय देव की पत्नी पद्मावती नर्तकी थं और स्वयं जयदेव मन्दिर में उनके भक्तिपूर्ण नृत्य की संगत करने वाली मण्डली के नेता थे जिसमें वे गीतगोविन्द के गीत गाया करते थे। गुजरात में गीतगोविन्द उन वैष्णव यात्रियों द्वारा लाया गया जिन्होंने इसे पूरी या कृष्ण–भक्ति सम्प्रदाय के किसी अन्य पूर्वी केन्द्र में सुना था।

जय–विजय के द्वार मार्ग के दायीं ओर स्थित उड़िया भाषा और लिपि में अंकित एक शिला लेख में इस बात का उल्लेख है कि मंदिर में गीतगोविन्द का अभिनय होता था। तथ्य यह सामने आता है कि गीत–गोविन्द की अष्टपदियां समकालीन नवशास्त्रीय ओडीसी नृत्य का अंग है। यह भी कहा जाता है कि श्री जगन्नाथ जी का प्राचीन नाम पुरूषोत्तम है, अनघं राघव के कर्ता मुरारि ने 10वीं शताब्दी के प्रारम्भ में पुरूषोत्तम की (रथ) यात्रा का उल्लेख करते हुए पुरूषोत्तम को कमला के कुलकलशों पर कस्तूरी से पत्रांकुर बनाते हुए चिचित्र किया है। यथा ––

कमला कुलकलशके लिकस्तूरिका पत्रांङकुरस्य[3]

इसका गीत गोविन्द के 'त्रितकमलाकुमण्डल वृतमण्डल में कितना साम्य है। मणिपुर में आषाड़ माह में नौ दिनों तक होने वाले जगन्नाथ के रथयात्रा उत्सव में प्रत्येक मन्दिर में 'जयदेव चोंग्वा' बोलकर ताली के साथ दशावतार प्रलय क्योंकि जले वृतवानसि वेदम्[4]

अष्टपदी का गायन कर नृत्य किया जाता है तथा दशावतार पूर्ण होने के बाद 'त्रितकमलाकुलमण्डल आदि पूरा पद गाया जाता है । इसी प्रकार गीतगोविन्द का अन्तिम पद भी जयदेव ने पुरूषोत्तम को समप्रित किया है। यथा––

'व्यापारः पुरूषोतमस्य ददतु स्फीतां मुदां संपदम!

तात्पर्य यह है कि गीतगोविन्द पुरूषोत्तम मन्दिर में गायन हेतु तत्काल अपनी लोकप्रियता तथा सुन्दर गीतात्मकता एवं भाव संयोजन के कारण स्वीकार कर लिया गया। मध्यरात्रि के श्रृंगार के अवसर पर देवदासियां इसी को गाती थीं और इसी पर नृत्य करती थीं। गीत गोविन्द अपनी अनूठी गीत शैली के कारण जन–जन के कण्ठ में बसने लगा। अतएव यह कहा जा सकता है कि गीतगोविन्द के प्रत्येक अक्षर में संगीत है, और वह शक्ति है जो अपने शिव और सुन्दर की प्रेरणा से हृदतन्त्री को निनादित करने में समर्थ है इसी प्रकार जिल शब्दों के द्वारा इन अक्षरों का संयोजन किया गया उनकी भाव प्रवणता एवं संगीतात्मकता संस्कृत साहित्य में अप्रतिम है।

इस प्रकार गीतगोविन्द की अष्टपदियों में रागों तथा तालों का प्रयोग होने के कारण शास्त्रीय संगीत के अनुसार उनके गीतों का गायन, नृत्य एवं अभिनय होता था।

गीतगोविन्द को दूर–दूर तक लोकप्रिय बनाने में चैतन्य महाप्रभु का प्रमुख योग रहा है। प्रस्तुत राग काव्य गीतगोविन्द का परिचय जयदेव ने पदावली के यप में दिया, यह पदावली शब्द अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि चैतन्य महाप्रभु के पदार्पण से बंगाल में विपुल गीत साहित्य

का विकास हुआ, यही पदावली साहित्य कहलाया। बंगाल में कीर्तन के रूप में इसका गायन बहुत प्रचलित और लोकप्रिय है, उड़ीसा के जगन्नाथ जी के मन्दिर में देवदासियों के द्वारा भगवान की शयनबेला पर गीतगोविन्द के पद गाने की परम्परा आज मंदिर परिसर से निकलकर जनसमाज में प्रसार पा चुकी है। ततिमलनाडु, केरल, आन्ध्र, कर्नाटक, बंगाल, मणिपुर तथा उत्तर प्रदेश के हिन्दुस्तानी संगीत में भी इसके गायन की परम्परा का प्रचलन है। दक्षिण भारत (तमिलनाडु, आंध्र, केरल, कर्नाटक) में स्त्रियां एकल गायिका के रूप में, भजन गायिका के रूप में इसे गाती हैं। इसके विपरीत बंगाल, उड़ीसा तथा मणिपुर में कीर्तन मण्डलियों में गीतगोविन्द के पद गाने की परम्परा आज भी है । कर्नाटक और हिन्दुस्तानी संगीत के शास्त्रीय रागों में तो गीत गोविन्द के संगीतज्ञों ने निबद्ध किया है और उनकी अष्टपदियों के गायन की परम्परा चली । गायन परम्परा के पश्चात् यह प्रश्न उपस्थित होता है कि जयदेव के युग में किस प्रकार का नृत्य प्रचलीत था, जिसका अनुसरण उन्होंने गीतगोविन्द में किया। किसी निश्चित प्रमाण के अभाव में केवल अनुमान ही ऐसा आधार है जिस पर यह कहा जा सकता है कि पूर्वी भारत में दो प्रकार के लोकनृत्यों की परिणति शास्त्रीय नृत्यों में हुई –– (1) ओडिसी (2) कुचिपूड़ी।

वस्तुतः प्राचीन कलाएं देवालय कलाएं रही हैं। मन्दिर के उपासना गृह के सम्मुख नटमण्डप में उनके लिए सदा उपयुक्त और पर्याप्त स्थान की व्यवस्था की जाती रही है। अतएव मन्दिर में चाहे ओडिसी नृत्य चाहे कुचिपुड़ी नृत्य होता रहा हो हर नृत्य में गीतगोविन्द की अष्टपदों का एक अंश सामान्यतः शामिल किया ही जाता है।

कर्नाटक शैली में आबद्ध गीतगोविन्द के रागों को लेकर रूक्मिणी देवी ने गीतगोविन्द से सम्बन्धित नृत्यनाटिकाओं की रचना की है। ओडिसी और मणिपुरी नृत्य शैलियों में गीतगोविन्द पर आधारित नृत्य की परम्परा सदियों से सुरक्षित है विशेष रूप से मणिपुरी में। उत्कल की नृत्य परम्परा इस शताब्दी के प्रारम्भ में लुप्त प्राय सी थी किन्तु पूर्णतः विलुप्त होने से पूर्व उसे मन्दिर की नर्तकियों तथा पारम्परिक नर्तक किशोरों के सहयोग से एवं कोणार्क मन्दिर में उत्कीर्ण नर्तकियों की भावभंगिमाओं की सहायता से सफलतापूर्वक पुनरूज्जीवित कर लिया गया। अतः यह कहा जा सकता है क प्रत्येक क्षेत्र में अपनी विशिष्ट शैली का विकास किया और क्षेत्रीय संस्कृति को समृद्ध किया, जो अनेकता में एकता का प्रतीक है।

गीतगोविन्द भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैलियों में –

गीतगोविन्द के प्रस्तुतिकरण में नव शास्त्रीय नृत्य शैलियों का बहुत योगदान रहा है। केरल विश्वविद्यालय त्रिवेन्द्रम के डा0 अय्यप्पा पानिकर के विद्वतापूर्ण लेख से ज्ञात होता है

कि केरल विश्वविद्यालय के पाण्डुलिपि पुस्तकालय के महत्वपूर्ण प्रकाशनों में 162 पृष्ठीय मलयालम मंच संहिता है जिसमें गीतगोविन्द के पारम्परिक कथकली शैली में प्रस्तुतिकरण का उल्लेख है। इसका नाम है 'अष्टपदी अट्टूटप्रकारम्' ओर यह कृडिअट्टस की मंच प्रस्तुति के लिए बहुत पहले से चले आ रहे अट्टप्रकारम् का अनुकरण करती है।[5] इसके लेखकर रामवर्मन कोचिन के निकट एडपल्ली के श्री वासुदेवनवालिया सम्पुरन के आश्रित एक पंडित थे। इसमें अभिनय की प्रणाली यही है जो कथकली में अपनायी जाती है। इसमें मंच प्रस्तुति का मूलाधार तोयंत्रिक का प्रयोग है और पूरी नृत्य कला का नियंत्रण मृदंग द्वारा किया जाता है। काव्य की अत्यन्त अलंकार युक्त शैली इस अति विस्तृत और आशु अभिनय के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। अतः गीतगोविन्द की पुनर्रचना इस प्रकार की जाती है कि वह कथकली शैली में प्रस्तुत की जा सके। इस प्रकार कथकली शैली के परिदृश्य में गीतगोविन्द का 'मंजुतर कंजतल केलिसवने, किलसरतिरमस हसितबदने, प्रविश राधे। माधवसमीपमिह' का पाठ मिलता है। इसी के आधार पर कथकली अभिनेता 'कलशम्' शुद्ध नृत्य करते हैं। इसी प्रकार मलयालम में भी ऐसी कविताएं हैं जो केरल के विभिन्न भागों में गीतगोविन्द की तरह शताब्दियों से लोकप्रिय रही हैं, केरल के जीवन और संस्कृति पर सामान्यतः और काव्य पर विशेष्ज्ञतः, संस्कृत का प्रभाव, मणिप्रवाल शैली का उदय, सूर्यास्त के समय केरल के लगभग सभी मन्दिरों में गीतगोविन्द के नाम का सतत प्रभाव रहा है। जिसके परिणामस्वरूप केरल के नर्तकों और संगीतकारों ने विभिन्न प्रकार से उसका उपयोग किया है।

इसी प्रकार मणिपुरी नर्तन शैली पर गीतगोविन्द का प्रभाव परिलक्षित होता है। मणिपुर में विविध प्रसंगों पर जयदेव के गीतगोविन्द के मूल पदों का प्रयोग होता आया है यथा –– हरिविलास के अष्टम विलास में वर्णन है कि प्रभु की स्तुति करताली नर्तन द्वारा करने से मुक्ति मिलती है, इसके अनुसार मणिपुर में आषाढ़ माह में नौ दिनों तक होने वाले जगन्नाथ जी के रथयात्रा उत्सव में प्रत्येक मन्दिर में 'जयदेव चोम्बा' बोलकर ताली के साथ दशावतार प्रलय पयोधि जले ––––– का गायन एवं नृत्य किया जाता है। दशावतार पूर्ण होने के बाद 'त्रितकमलाकुथमण्डल ..... पूरा पद गाया जाता है। इस प्रकार जयदेव के मधुर कोमल पदों को लालित्यपूर्ण सुकुमार अंगमंगीयुक्त मणिपुरी नर्तन शैली में अभिव्यंजना की जाती है। मणिपुरी नृत्यशैली में अभिनय अधिकतर 'गमक' रीति से किया जाता है। तात्पर्य यह है कि सूचनात्मक राधा, उत्तर नायिका होने के कारण उसका अभिनय इतना यथार्थ नहीं होगा जितना कि गम्भीर एवं मर्यादायुक्त होगा, जैसे खण्डिता नायिका में राधा का क्रोध या ईर्ष्या का भाव है। किन्तु मणिपुर में साधारण दुःख या व्यथा का भाव व्यक्त करेंगे यानि दुःख मिश्रित

क्रोध और ईर्ष्या में। इसमें दुखाभिनय स्वाभाविक रीति से होगा, किन्तु हस्तकाभिनय का विनियोग सांकेतिक रीति से होता है। कभी–कभी अंग द्वारा भी अर्थ की अभिव्यक्ति की जाती है। मणिपुर में आज तक मन्दिरों में नृत्य–संगीत होता आया है। इसमें भक्ति का महत्व, शैली में मर्यादा एवं संस्कारिता अधिक है।

अतएव मणिपुरी शैली में जो संयम दिखाई देता है वह भिन्न सौन्दर्यात्मक दृष्टि का परिचायक है। इस संयत प्रस्तुति ने अष्टपदियॉ को बहुत गरिमा प्रदान की है, त्रितकमलाकुचमण्डल घृतकुण्डल ए का गुरु अमुत्री सिंह द्वारा किये गये अभिनय ने दर्शकों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है जिन्होंने उन्हें गाते और अभिनय करते देखा है उनका उन पर विशेष प्रभाव पड़ा है।[6] इसी प्रकार गुरू विपिन सिंह को 'याहि माधव याहि केशव' ऐसे प्रस्तुति करण का प्रयास है जो मणिपुरी परम्परा के ढांचे में खण्डित नायिका का शब्द चित्रण है। इस प्रकार राधा की व्यथा, अन्य गोपियों के साथ कृष्ण द्वारा समय व्यतीत करने पर अकाम्य क्रोध तथा उसके परिणामस्वरूप होने वाली ईर्ष्या और दुःख आदि बातें कलात्मक रूप में ऊभर कर आयी है।

इसी प्रकार गीतगोविन्द को नृत्य नाटक के रूप में प्रस्तुत किये जाने का उल्लेख प्राप्त होता है। यही कारण है कि नृत्य नाटक के कला क्षेत्र संग्रहों में गीतगोविन्द अत्यन्त महत्वपूर्ण रचना है। इसकी नृत्य लिपि ऐसे नृत्य नाटक के रूप में तैयार की गयी है जिसमें गोपियों–कृष्ण के मुख्य रूपों, राधा, सखी की भूमिकाएं अनेक नर्तक और नर्तकियां निभाती हैं। उदाहरणस्वरूप रूक्मिणी देवी तथा अन्य प्रवर्तक तथा पुनरूत्थानवादी कलाकारों ने गीतगोविन्द पर आधारित नृत्य नाटकों का स1जन किया है। मृगालिनी साराभाई ने इसे दिल्ली में 1958 में आयोजित अखिल भारतीय नृत्य संगोष्ठी में नृत्य–नाटक के रूप में प्रस्तुत किया था। उड़ीसा के एक वल ने भी इसे ओडिसी शैली में नृत्य नाटक के रूप में प्रस्तुत किया था। बम्बई के प्रसिद्ध नृत्य रचनाकार योगेन्द्र देसाई ने इसे जयदेव और उनकी पत्नी पद्मावती की कथावस्तु के साथ नृत्य–नाटक के रूप में प्रस्तुत किया। इस प्रकार इस कृति के के अभिनय में अपनायी गयी अन्य शैलियां भी हैं –

कथक तथा अन्य मिश्रित शैलियाँ । परन्तु गीतागोविन्द के नृत्य मणिपुरी शैली में ही थे और इसके मूल रूप में कोई परिवर्तन नहीं किया गया था। इसी प्रकार नृत्यकारों द्वारा प्रायः मंच पर संगीत के योग में की जाने वाली अन्तिम अष्टपदी 'कुरूयदुनंदन' प्रतिभाशाली नृत्यकार के नृत्य की क्षमता का उदाहरण है। इस अष्टपदी को गुरूवेलेचरण महापात्र द्वारा ओडिसी में तथा सी0आर0 आचार्यलुद्वारा कुचिपूड़ी में प्रस्तुति का उल्लेख मिलता है।

डा0 सुनील कोठारी ने अपने लेख में लिखा है कि मैंने 1952 ई0 में रानी कर्मा से जानकारी प्राप्त की थी कि डा0 श्रीमती कपिला वात्स्यायन (मणिपुरी), श्रीमती ललिता शास्त्रीय (भरत नाट्यम) और रानी कर्मा (कत्थक) ने अष्टपदियों को तीन विभिन्न शैलियों में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। मैंने हरिरिहमुग्ध वधू अष्टपदी की श्रीमती मायाराव और उनकी छात्रा जयश्री ठाकुर द्वारा कत्थक में प्रस्तुति देखी है।

अतएव यह कहा जा सकता है कि समकालीन रंगमंच पर विभिन्न नृत्य शैलियों में एकल नर्तकीं द्वारा अष्टपदियों का प्रस्तुतिकरण किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1— गीत गोविन्द — महाकवि जयदेव 1131 पृ0सं0 9

2— गीत गोविन्द — महाकवि जयदेव 10119 पृ0सं0 49

3— अनर्घ राघव — मुरारी प्रथम अंक पृ0सं0 4

4— गीत गोविन्द — प्रथम सत्र पृ0सं0 2

6— संदर्भ भारती — पृ0सं0 61